तञ्जावूरका धर्मराज्य

तञ्जावूरके राजा सरफोजी महाराजने सन् १८०१ ईसवीमें तञ्जावूर सभामें आरोपित ब्रितानी 'रेज़ीडेंट' के नाम एक पत्र लिखकर ब्रितानी प्रशासकोंको अपने राज्यके अन्नक्षेत्रोंके कामकाज एवं सहज भारतीय व्यवस्थामें इन संस्थाओंके महत्त्वसे अवगत करवानेका प्रयास किया। अन्नक्षेत्रके लिये तमिल शब्द 'छत्रम्' है। इन छत्रोंका सजीव चित्रण करते हुए सरफोजी महाराज लिखते हैं–

मैं आपको इन छत्रोंसे प्रवाहित होनेवाले पुण्य कार्योंके स्वरूप एवं विस्तारसे अवगत करवा दूं– यहाँ आनेवाले सब यात्री, ब्राह्मणसे लेकर परया हरिजनतक सब जातियोंके, और जोगी, जंगम, अतीत, बैरागी आदि विभिन्न रूपोंमें आनेवाले सब लोग, यहाँ पहुँचनेपर पके चावलका भोजन पाते हैं। उनमें से जो पका अन्न ग्रहण नहीं करते उन्हें विभिन्न आवश्यक द्रव्यों सहित कच्चा चावल दिया जाता है। पके व कच्चे अन्नका यह वितरण आधी राततक चलता रहता है और तब घंटी बजाकर घोषणा की जाती है कि जिस किसीको तबतक भोजन प्राप्त न हुआ हो वह आकर अपने भागका अन्न ले जाये।

प्रत्येक छत्रमें चार वेदोंके अध्ययनके लिये एक-एक आचार्य, एक सामान्य शिक्षक और विभिन्न रोगों तथा सब प्रकारके शोथ एवं साँप-बिच्छु आदि के विषकी चिकित्सा करनेमें दक्ष वैद्य नियुक्त किये गये हैं।

शेष अगलेपृष्ठपर...

तञ्जावूरका धर्मराज्य

... पूर्वपृष्ठसे आगे

अनजान लोगोंके भी जो अनाथ बच्चे छत्रमें आ पहुँचते हैं, उन सबको शिक्षककी देखभालमें रखा जाता है। उन्हें दिनमें तीन समय भोजन दिया जाता है और प्रतिचौथे दिन उनका तेलसे अभ्यञ्जन होता है। आवश्यकता पड़नेपर उन्हें औषधि एवं समय-समय पर वस्त्र उपलब्ध करवाये जाते हैं, और उनकी सब प्रकारसे समुचित देखभाल करनेके सब प्रयास किये जाते हैं। जिस किसी विद्यामें उनकी रुचि हो उन्हें उस विद्यामें शिक्षा दिलवाई जाती है, और जब वे अपनी रुचिके विषयमें पारङ्गत हो जाते हैं तो उनके विवाहका व्यय छत्र उठाता है।

छत्रमें पहुँचकर जो यात्री अस्वस्थ हो जाते हैं उनके लिये औषध एवं समुचित अन्नपानका प्रबन्ध किया जाता है और स्वस्थ होनेतक सम्मान एवं स्नेहपूर्वक उनकी सेवा-शुश्रूषा की जाती है।

शिशुओंके लिये दूध दिया जाता है। गर्भवती महिलाओंकी विशेष स्नेहपूर्वक देखभाल की जाती है। उनमें से जिनका गर्भ छत्रमें रहते हुए पूर्ण हो जाता है उनके प्रसवका व्यय छत्र उठाता है। उनके लिये समुचित औषधियाँ उपलब्ध करवायी जाती हैं और प्रसवके पश्चात् तीन महीनेतक उन्हें छत्रमें रहने की अनुमति होती है।

तञ्जावूरराज्य अपने दान-पुण्यके लिये जगत्में प्रसिद्ध है। इसे धर्मराज्यके नामसे जाना जाता है। इस नामके कारण समस्त राज्योंमें मुझे जो विशेष सम्मान प्राप्त होता है उसे मैं अपने पदका सर्वोच्च गौरव मानता हूँ।

रामराज्य

सार्वजनिक नीतिव्यवस्थाकी भारतीय अवधारणाओंके अनुरूप संगठित राज्य जिसमें समाजके समस्त सहज संघटक बिना किसी व्यवधानके अपने-अपने अधिकार-क्षेत्रमें अपने-अपने कार्यका सम्यक् सम्पादन करनेमें समर्थ हों और जिस राज्यमें समाजके सहज संघटकोंके पूर्वप्रतिष्ठित अनुशासन एवं धर्मकी रक्षा होती हो, ऐसे राज्यको रामराज्यकी संज्ञा दी गई है। ऐसे राज्यमें प्रकृति सौम्य रूपमें अवस्थित रहती है, सब कुछ सुव्यवस्थित होता है, सब प्राणी स्वस्थ होते हैं, सब प्रसन्न होते हैं, सबको समुचित भरण-पोषण प्राप्त होता है। महाकवि वाल्मीकि रामायणके प्रारम्भमें ही भावी रामराज्यका चित्रण करते हुए लिखते हैं –

> श्रीरामके राज्यमें सब लोग प्रसन्न एवं सुखी होंगे। सब पुष्ट एवं सन्तुष्ट रहेंगे। सब धर्ममें प्रतिष्ठित होंगे। सब सर्वदा स्वस्थ रहेंगे, किसी प्रकारकी कोई व्याधि किसीको नहीं सतायेगी। कभी किसीको दुर्भिक्षका कोई भय नहीं रहेगा।
>
> कोई पिता पुत्रमरणका दुःख नहीं झेलेगा। कोई स्त्री विधवा नहीं होगी। सब सदा पतिव्रतमें निष्ठ रहेंगी।
>
> अग्निसे कोई अनिष्ट नहीं होगा। कोई जीव जलमें नहीं डूबेगा। किसी प्रकारके ज्वर अथवा वातका किञ्चित् भी भय नहीं रहेगा। किसीको भूखके विषयमें चिन्तित नहीं होना पड़ेगा। कभी कहीं कुछ चुराया नहीं जायेगा।
>
> नगर और राष्ट्र धनधान्यसे परिपूर्ण होंगे। सब सदा प्रसन्न एवं सुखी होंगे। रामराज्यमें मानो सतयुग ही पुनःस्थापित हो जायेगा।

सामञ्जस्य एवं सम्भरणपर आधारित भारतीय संस्कृति

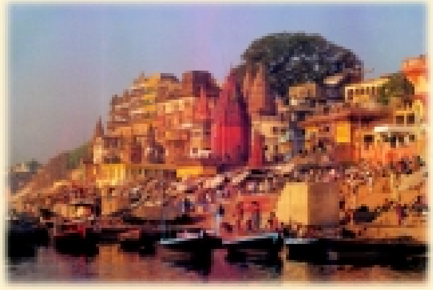

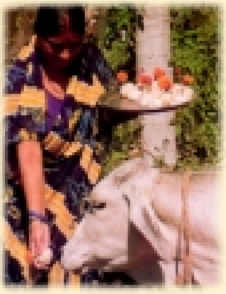

सामञ्जस्य एवं सम्भरणपर आधारित भारतीय संस्कृति

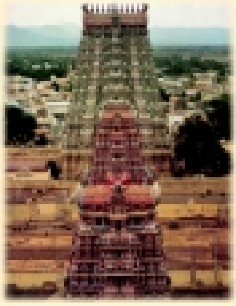

सामञ्जस्य एवं सम्भरणपर आधारित भारतीय संस्कृति